

दुःख के मूल पर ध्यान केन्द्रित करें: आचार्यश्री महाश्रमण
केलवा में चातुर्मास, सवन्त्सरी पर गलितियों का शोधन करने की
दी सीख

केलवा: 23 अगस्त

आचार्यश्री महाश्रमण ने श्रावक—श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे भौतिक सुखों को त्यागने की प्रवृत्ति विकसित करें। आज उन्हें विभिन्न आसक्तियों ने अपने मोहपाश में बांध लिया है। इससे छुटकारा पाने के लिए धर्म, आराधना, तपस्या की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। यह हमें परम सुखों की अनुभूति से पीछे की ओर धकेलती है। स्वाध्याय और ध्यान से भी सुख को प्राप्त किया जा सकता है। हमें दुःख के मूल पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। मूल तक जाने से ही समाधान मिल सकता है। दुःख को दूर करने के लिए उपाय पर ध्यान दिया जा सकता है।

आचार्यश्री ने यह उद्गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान मंगलवार को दैनिक प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मुक्त आत्माओं को जिस प्रकार का सुख मिलता है उस तरह के सुख की अनुभूति किसी व्यक्ति और देवों को भी नहीं होती। व्यक्ति अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर लेता है तो वह विकास के पथ पर अग्रसर हो जाता है। अगर इंद्रियां उसके वश में नहीं रहती हैं तो वह पतन की ओर चला जाता है। हमारे विचार, आचार और व्यवहार अच्छे होने चाहिए। इससे मन में शुद्धता आएगी और समाज एवं स्वयं का विकास हो सकेगा। आचार्यश्री ने राग और द्वेष को आसक्ति का पर्याय बताते हुए कहा कि आदमी को चाहिए कि वह सुख और दुःख के मूल को समझने का प्रयास करें। अनाशक्ति में वीतरागता में सुख है पर बाह्य पदार्थों में नहीं हो सकता। पदार्थों की आसक्ति दुःख की ओर ले जाती है।

उन्होंने एक मां और बेटे का वृत्तांत प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम अपने मूल को समझेंगे तो कभी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आदमी को अपनी साधना का मूल्यांकन करना चाहिए। अध्यात्म की साधना करना हमें विशिष्टता का अहसास कराता है। इसे लेकर अपना—अपना दृष्टिकोण हो सकता है। अध्यात्म के आगे चिंतामणि रत्न भी फीका पड़ जाता है। राग द्वेष की भावना रखना हमें दुःख की ओर धकेलता है। इससे दूर रहने के लिए संयम की साधना करने की आवश्यकता है। साधना के विकास की आवश्यकता जताते हुए उन्होंने कहा कि हम मूल लक्ष्यों की प्राप्ति में आगे बढ़ते रहे। हमें यह जानने की जरूरत है कि अनाशक्ति की साधना में अभी क्या स्थिति है।

इसके लिए आत्म परीक्षण कर भीतर व्याप्त कषाय को दूर करना होगा। साथ ही निर्धारित आचार के प्रति जागरूक रहकर इसकी उपेक्षा से बचना होगा। हम अपने

जीवन को ऊपरी तौर पर सींचित करेंगे तो मुरझा जाएंगे और मूल से संस्कारों को सींचेंगे तो परिवार और समाज का भी विकास कर सकेंगे।

श्रावक जीवन में आए 12 व्रत

आचार्यश्री ने श्रावक—श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में 12 व्रत अपनाने का प्रयास करें। इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। इस जन्म में किए गए व्रत का फल अगले जन्म में मिलता है। ग्रिहस्थ को भी कुछ अंशों में साधना करने की आवश्यकता है। इससे आत्मा का कल्याण हो सकेगा। संबोधि में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि परम् सुख वीतराग को प्राप्त होता है। दिखावे के तौर पर की जाने वाली साधना से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। वास्तविक साधना और आध्यात्म की आराधना से हम कषायों को मंद करते हैं। हमारी इंद्रियां शांत रहती हैं और हमें आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने अगले माह आने वाले संवत्सरी महापर्व को लेकर कहा कि यह महापर्व हमारे जीवन में वर्षभर के दौरान जाने—अंजाने में होने वाली गलतियों को सुधारने का दिन है। एक तरह से ग्रंथियों को खोलने का अवसर हमें प्राप्त हो रहा है। इस दिन खमत खामना कर अपनी गलतियों का शोधन करें और अगले वर्ष में अच्छा करने का प्रण लेकर जीवन मार्ग को प्रशस्त करें। जिस तरह से कपड़े मैले हो जाते हैं और हम उन्हें साफ करने के लिए धोते हैं। उसी तरह से साधना के माध्यम से व्यक्ति को अपनी गलतियों को धोने की आवश्यकता है। प्रतिक्रमण को भी उन्होंने मन में व्याप्त कषाय का धोने के उपक्रम की संज्ञा दी। उन्होंने शरीर सुख को प्रतिपादित करते हुए कहा कि यह बाहरी तौर पर दिखने वाली अनुभूति है। आत्मिक तौर पर अनुभव किया जाने वाला सुख हमें श्वाश्वत रूप से मिलता है।

अध्यात्म और व्यवहार अलग—अलग

मंत्री मुनि सुमेरमल ने आध्यात्म और व्यवहार को अलग—अलग रूप में प्रतिपादित करते हुए कहा कि अध्यात्म पर चलने वाला व्यक्ति जीवन को बाहर से समेटता है और व्यवहार के मार्ग पर चलने वाला बाहरी दुनियां के चकाचौंध को अपने जीवन में शामिल करने का प्रयास करता है। इस प्रवृत्ति से उसे कुछ समय के लिए सुख की अनुभूति हो सकती है, लेकिन लंबे सुख के लिए हमें बाहर से नजर आने वाली दुनियां के क्रियाकलापों को त्यागने की आवश्यकता है। व्यक्ति अन्य लोगों अथवा दुनियां से उसके सम्मान में की जाने वाली प्रशंसा को सुनकर गदगद हो उठता है और उसी के अनुरूप अपने जीवन को ढालने का प्रयास करता है। एक तरह से वह दुनियां की कठपुतली बनकर रह जाता है। इससे सापेक्ष सुख की अनुभूति होती है। हम बाहर की दुनियां में जितना रहेंगे उतना ही अपने जीवन के विकास को अवरुद्ध करेंगे। आध्यात्म बाहरी क्रियाओं को समेटकर भीतर का विकास करता है। स्वयं की अनुभूति के लिए

हमें इंद्रियों को शांत रखने की जरूरत है। इससे मन नहीं भटकेगा और परम सुख की अनुभूति होगी। व्यवहार में इतना न रचे कि हम आध्यात्म के सुख को ही भूल जाए। बाहर से हटेंगे तो भीतर देख पाएंगे। उन्होंने श्रावक—श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे अपने जीवन को भौतिक सुखों से दूर रखने का प्रयास करें। बोलते समय अपनी वाणी पर संयम रखे। इससे व्यवहार में कमी नहीं बल्कि ओर अधिक प्रगाढता आएगी। इस मौके पर संस्कार सुगंध पत्रिका के अमृत महोत्सव विशेषांक को पत्रिका की संपादिका प्रभा जैन ने आचार्यश्री महाश्रमण को भेंट की। सुमित सांखला को 9 की तपस्या एवं हिनल सांखला को 8 की तपस्या का प्रत्याखान दिया। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

धूमधाम से मनेगा गणपति महोत्सव

केलवा: 23 अगस्त

कस्बे में आगामी एक सितम्बर को गणपति महोत्सव धूमधाम से मनाने को लेकर मंगलवार को महाराणा प्रताप सेना एवं शिवदल मेवाड केलवा के संयुक्त तत्वावधान में पदाधिकारियों की बैठक हुई। इस दौरान यह निर्णय किया गया कि एक सितम्बर को गणपति स्थापना, दो से पांच सितम्बर तक विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, 6 सितम्बर को रात्रि जागरण एवं भजन संध्या तथा 7 सितम्बर को विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। बैठक में कैलाश जोशी, मदनलाल पालीवाल, देवेन्द्र पालीवाल, संपतसिंह राठौड, शंभू सोनी, किशनलाल पालीवाल, कमलसिंह, आनंद जोशी, पुनीत सोनी, दिनेश बोराणा दिनेश चंदेल आदि उपस्थित थे।

आज केलवा बंद का आह्वान

केलवा: 23 अगस्त

गांधीवादी विचारक अन्ना हजारे के आंदोलन के समर्थन में बुधवार को केलवा कस्बा बंद रहेगा। जन लोकपाल सत्याग्रह समिति राजसमंद के आह्वान पर केलवा के व्यापारियों ने पूर्ण समर्थन देते हुए अपने प्रतिष्ठानों को पूरी तरह से बंद रखने का निर्णय किया। समिति के सदस्य कैलाश जोशी ने बताया कि बंद के दौरान प्रातः 10 बजे जल मंदिर से रैली निकाली जाएगी।

झांकियों ने मोहा मन

केलवा: 23 अगस्त

कस्बे के विभिन्न विद्यालयों में सोमवार को श्रीकृष्ण जंमाष्टमी के अवसर पर विद्यार्थियों ने तरह—तरह के वेश धारण कर लोगों का मन मोह लिया। विद्या निकेतन उच्च प्राथमिक विद्यालय की ओर से जागनाथ महादेव मंदिर में कृष्ण बनो प्रतियोगिता रखी गई। प्रधानाचार्य दिनेश आचार्य ने कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। इस दौरान

विद्यार्थियों ने बाल कृष्ण लीला, माखन चोर, कृष्ण-सुदामा, कारागृह में देवकी वासुदेव, कृष्ण यशोदा इत्यादि झांकिया प्रदर्शित की। प्रतियोगिता के संयोजक अनिल पालीवाल थे। अंत में मटकी फोडी गई।